17 जुलाई 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन
सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 8 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (द्वितीय), 2018 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

मुमुक्षु गगन का एक और नक्षत्र खिरा

टोडरमल स्मारक में श्रद्धांजलि समर्पित

मध्यप्रदेश के एक साधारण परिवार में जन्मे असाधारण विद्वान **डॉ. उत्तमचंदजी जैन** का दिनांक 30 जून, 2018 को छिन्दवाड़ा में शान्त परिणामोंपूर्वक देहविलय हो गया। उनका अवसान मुमुक्षु समाज की अपूरणीय क्षति है।

अंग्रेजी में एम.ए. एवं बी.एड. का अध्ययन करके जून 1969 में मध्यप्रदेश में सरकारी शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं प्रारम्भ करके प्राचार्य पद तक पहुंचकर सन् 2006 में सेवानिवृत्त हुये।

जयपुर पंचकल्याणक-2012 के अवसर पर प्रवचन करते हुए डॉ. उत्तमचंदजी जैन

भोपाल में झिरनों के मंदिर के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर सन् 1963 में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचन सुनने का प्रथम योग मिला। समझ में कुछ नहीं आया; परन्तु जिज्ञासा जरूर खड़ी हो गयी और फलस्वरूप सोनगढ गये। प्रथम बार ही सोनगढ में डेढ माह रुककर प्रवचनों का लाभ लिया। गुजराती प्रवचन समझ में नहीं आने पर आपने गुरुदेवश्री से हिन्दी में प्रवचन करने का आग्रह किया और गुरुदेवश्री ने प्रसन्नतापूर्वक हिन्दी में प्रवचन किये। गुरुदेवश्री के व्यक्तित्व से आप इतने प्रभावित हुए कि सोनगढ से लौटते हुए आलू-प्याज आदि जमीकंद व बैंगन आदि अभक्ष्य-भक्षण का त्याग किया।

पूज्य गुरुदेवश्री के साथ ही सोनगढ में आदरणीय रामजीभाई दोशी, पण्डित खीमचंदभाई शेठ, पण्डित लालचंदभाई मोदी, पण्डित बाबूभाई मेहता आदि अनेक वरिष्ठ विद्वानों से भी तत्त्वज्ञान का विशेष लाभ मिला।

रुचि जागृत होने पर जिनवाणी का विशेष गहराई से अध्ययन करके जैनधर्म के तलस्पर्शी विद्वान व लोकप्रिय प्रवचनकार बने। सन् 1969 से ही आप दशलक्षण महापर्व पर प्रवचनार्थ जाने लगे और धीरे-धीरे आपको मुमुक्षु समाज के वरिष्ठ विद्वानों में विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित अनेक शिक्षण-शिविरों में, प्रशिक्षण शिविरों में, पंचकल्याणकों में, वेदी प्रतिष्ठादि कार्यक्रमों में उपस्थित होकर गरिमा बढाई। देश-विदेश का मुमुक्षु समाज आपके बुलन्द किन्तु मधुर वाणी में होने वाले प्रवचनों को सुनने के लिये सदैव लालायित रहता था।

कठिन-कठिन विषयों को सरल करके समझाने की अद्वितीय कला आपके पास थी। शास्त्रों की अनेक गाथाएं, श्लोक, छन्द व अनेक भजन आपको कण्ठस्थ थे। अनेक ग्रंथों की टीकाएं लिखकर भी आपने जिनवाणी की महती सेवा की है।

सादा जीवन उच्च विचार की प्रतिमूर्ति डॉ. उत्तमचंदजी को गृहीत मिथ्यात्व पोषक रुढियां बिलकुल नापसन्द थी और उनका वे खुलकर विरोध भी करते थे। निस्पृह वृत्ति के धारी व आत्मकल्याण को ही प्रमुखता देने वाले पण्डितजी ने अपनी गंभीर बीमारी व उसके दुष्प्रभावों के बावजूद जब तक सामर्थ्य रही प्रवचन करते रहे और बाद में अन्तिम दो दिन सर्वऔषधि आदि का त्याग करके सल्लेखनापूर्वक तत्त्वचिन्तन करते हुए शान्त परिणामों से देह छोड़ी।

आपकी स्मृति में श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 1 जुलाई को प्रात: शोक सभा का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम पण्डितजी का वीडियो प्रवचन प्रसारित किया गया। तत्पश्चात् शोक सभा प्रारम्भ हुई, जिसमें पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित पीयूषजी शास्त्री, श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, श्री महेन्द्रजी गंगवाल, श्री महेन्द्रजी गोधा, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के सदस्य, महाविद्यालय के समस्त छात्र, पदाधिकारीगण, अनेक भूतपूर्व विद्यार्थी एवं सत्साहित्य सेवा समिति, बापूनगर, जनता कॉलोनी, आदर्श नगर समाज के सदस्यगण उपस्थित थे।

इस अवसर पर डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने डॉ. उत्तमचंदजी का परिचय दिया। साथ ही पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. श्रेयांसजी, पण्डित रमेशजी शास्त्री 'दाऊ', डॉ. दीपकजी, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल, आदर्श नगर से श्री फूलचंदजी, जनता कॉलोनी से पण्डित राजेशजी शास्त्री आदि महानुभावों ने अपना वक्तव्य दिया। समस्त छात्रों की ओर से मयंक जैन, बण्डा ने कविता के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो।

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

13

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रश्न :– स्वभाव के साधन हेय हैं या उपादेय?

उत्तर :– एकदेश उपादेय, क्योंकि जबतक स्वभाव की सिद्धि नहीं हो जाती, तब तक साधन उपादेय रहते हैं। अतः इन्हें एकदेश या आंशिक रूप से उपादेय कहा जाता है। अन्ततोगत्वा स्वभाव की सिद्धि होने पर ये साधन स्वयं साध्यरूप हो जाते हैं, इस कारण इन्हें हेय नहीं कहा जा सकता। संवर-निर्जरा तत्त्व तो धर्मरूप परिणाम हैं।

प्रश्न : ये स्वभाव के साधन सादि-सान्त हैं या अनादि-अनंत?

उत्तर : सादि-सान्त हैं, क्योंकि मिथ्यात्व दशा में नहीं थे और सिद्धदशा में भी नहीं रहेंगे। ये तो हमारे आगंतुक मेहमान हैं।

प्रश्न : स्वभाव के साधन पाँच भावों में कौन से भाव हैं?

उत्तर : उपशम, क्षय, क्षयोपशमरूप तीनों भाव हो सकते हैं।

प्रश्न : ये स्वभाव के साधन सात तत्त्वों में कौन से तत्त्व हैं?

उत्तर : संवर-निर्जरा तत्त्व हैं।

(५) अब सिद्धत्व पर सुखदायक-दुःखदायक आदि पाँचों को घटित करते हैं।

प्रश्न : सिद्धत्व सुखदायक है या दुःखदायक?

उत्तर : सुखदायक, क्योंकि यह अष्टकर्म रहित आत्मा की पूर्ण निर्मल दशा है।

प्रश्न : सिद्धत्व हेय है या उपादेय?

उत्तर : उपादेय, क्योंकि यह सुखदायक है।

प्रश्न : सिद्धत्वभाव सादि-सान्त है या सादि-अनंत।

उत्तर : सादि-अनंत, क्योंकि प्रगट होने पर अनन्तकाल तक मलिनरूप परिणमन नहीं करते। एकरूप निर्मल ही रहते हैं। इस अपेक्षा सादि-अनन्त कहा जाता है।

प्रश्न : यह पाँचों भावों में कौनसा भाव हैं?

उत्तर : क्षायिकभाव।

प्रश्न : सात तत्त्वों में कौनसा तत्त्व हैं?

उत्तर : मोक्ष तत्त्व।

अभी तक संयोगादि पाँच बोलों में क्रम से सुखदायक आदि पाँच बोलों को घटित किया। इसीप्रकार सुखदायक आदि बोलों में संयोगादि के बोल भी घटित किये जा सकते हैं, जैसे कि –

१. सुखदायक-दुःखदायक बोले में –

१. परद्रव्य होने से संयोग न सुखदायक है, न दुःखदायक।
२. संयोगीभाव विकारीभाव होने से दुःखदायक है।
३. स्वभाव सर्वथा सुखदायक है।
४. स्वभाव के साधन एकदेश सुखदायक हैं।
५. सिद्धत्व सर्वदेश (पूर्ण) सुखदायक है।

२. हेय-ज्ञेय-उपादेय के बोले में –

१. संयोग मात्र ज्ञेय है।
२. संयोगीभाव हेय हैं।
३. स्वभाव सर्वथा उपादेय हैं।
४. स्वभाव के साधन एकदेश उपादेय हैं।
५. सिद्धत्व सर्वदेश (पूर्ण) उपादेय हैं। **(क्रमशः)**

शिकागो में अतिविशिष्ट सेवा अवार्ड से –

डॉ. संजीव गोधा सम्मानित

शिकागो : विश्व में अहिंसा और अनेकान्त जैसे जैन सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिये युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमार गोधा को शिकागो में अतिविशिष्ट सेवा अवार्ड से सम्मानित किया गया।

यह सम्मान जैन सेन्टर ऑफ मेट्रोपोलिटन, शिकागो की ओर से जैन मन्दिर के 25वें वार्षिकोत्सव पर विश्व प्रसिद्ध दिगम्बर व श्वेताम्बर धर्मगुरुओं के सान्निध्य में दिया गया। ज्ञातव्य है कि दिनांक 22 जून से 1 जुलाई तक चले इस आयोजन में डॉ. गोधा ने दिगम्बर धर्म का प्रतिनिधित्व किया, जहाँ हजारों लोगों की उपस्थिति में आपके मार्मिक व्याख्यान भी हुये। महोत्सव में एक दिन भट्टारक चारुकीर्तिजी एवं डॉ. गोधा के सान्निध्य में पवैयाजी द्वारा लिखित 64 ऋद्धि विधान का आयोजन भी हुआ। संपूर्ण आयोजन में लगभग 2500 लोगों ने धर्मलाभ लिया।

डलास टेक्सास में अपूर्व धर्मप्रभावना

डलास (अमेरिका) : यहाँ दिनांक 11 से 27 जून तक अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई, जिसमें डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 21 से 27 जून तक डॉ. भारिल्ल द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर प्रवचन हुये। दिनांक 16 से 18 जून तक श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर दोनों युवा विद्वानों द्वारा शिविर एवं पंचपरमेष्ठी मंडल विधान का भव्य आयोजन हुआ। दिनांक 18 जून को जिनेन्द्र-भक्ति एवं सायंकाल संजीवजी के प्रासंगिक विषय पर प्रवचन का लाभ मिला।

ग्रीष्मकाल में विभिन्न शिविर संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन देवनगर द्वारा तथा स्व. श्री पदमचंदजी बजाज कोटा की स्मृति में दिनांक 9 से 16 जून तक ब्र. सुमतप्रकाशजी के सान्निध्य में 14वें सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर म.प्र. के भिण्ड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, टीकमगढ, गुना जिलों में तथा उ.प्र. के इटावा, मैनपुरी, आगरा, फिरोजाबाद, झांसी, ललितपुर आदि जिलों के विभिन्न 78 स्थानों पर एकसाथ आयोजित किया गया।

इस शिविर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर से 71, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा से 13, श्री आचार्य धरसेन दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा से 10, ब्रह्मचारी विद्वान, विदुषी बहनें, स्वाध्यायी विद्वान 16, भूतपूर्व शास्त्री 33 व स्थानीय स्तर पर 60 - इसप्रकार कुल 203 विद्वानों के सहयोग से धर्मप्रभावना हुई। सभी शिविर स्थानों पर प्रतिदिन प्रात: सामूहिक पूजन, शिविर कक्षाएं, प्रवचन, दोपहर में कक्षा, सायंकाल शिविर कक्षा, भक्ति, प्रौढ कक्षा, प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि कार्यक्रम संपन्न हुये। इस शिविर के माध्यम से 9412 बच्चों सहित कुल 14221 साधर्मियों ने लाभ लिया।

शिविर के निर्देशक पण्डित अनिलजी शास्त्री थे।

दिल्ली : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मंदिर विश्वास नगर के तत्त्वावधान में दिनांक 28 मई से 6 जून तक 7वाँ जैन जागृति शिक्षण शिविर संपन्न हुआ। इस शिविर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के वर्तमान एवं भूतपूर्व विद्यार्थियों द्वारा लाभ प्राप्त हुआ। यह शिविर दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश के 13 स्थानों पर आयोजित किया गया। शिविर का संयोजन पण्डित ऋषभजी शास्त्री एवं पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली द्वारा किया गया।

अजमेर (राज.) : यहाँ पुरानी मंडी स्थित श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 17 से 24 जून तक ग्रीष्मकालीन आध्यात्मिक बाल युवा व प्रौढ चेतना शिविर संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा द्वारा बच्चों की कक्षाएं ली गई। शिविर में अनेक बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2018

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 18 अगस्त 2018	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
रविवार 19 अगस्त 2018	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड -द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड -प्रथम वर्ष
सोमवार 20 अगस्त 2018	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

प्रबन्धक-परीक्षा बोर्ड

पधारिये! अवश्य पधारिये!! !! श्री वीतरागाय नमः !! तत्वज्ञान का अपूर्व लाभ लीजिये!!

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

41वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

आमंत्रण पत्रिका

रविवार, दिनांक 12 अगस्त 2018 से मंगलवार, दिनांक 21 अगस्त, 2018 तक

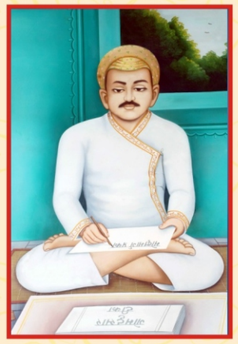

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर श्री टोडरमलजी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

आपको सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रतिवर्ष आयोजित होनेवाले आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की श्रृंखला का इकतालीसवाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा रविवार, दिनांक 12 अगस्त 2018 से मंगलवार, दिनांक 21 अगस्त, 2018 तक अनेक विशिष्ट मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

इस अवसर पर देश के गणमान्य श्रेष्ठी मुम्बई से सर्वश्री कान्तिभाई मोटानी, दिलीपभाई शाह, विपुलभाई मोटाणी, नितिनभाई शाह, श्री आई.एस. जैन, कैलाशजी छाबडा, संजयजी कोठारी, डॉ. अरुणजी दोंडल; बैंगलोर से चम्पालालजी भण्डारी, रमेशजी भण्डारी, अशोकजी जैन; बडौदा से अजितकुमारजी जैन; भोपाल से महेन्द्रकुमारजी चौधरी, अशोकजी जैन (सुभाष ट्रांसपोर्ट), देवेन्द्रजी बडकुल; इन्दौर से विजयकुमारजी बडजात्या, पदमजी पहाडिया; अहमदाबाद से रमेशभाई शाह, अजितभाई मीठालाल मेहता; कोलकाता से सुरेशजी पाटनी, भरतभाई टिम्बडिया, सुशीलकुमारजी जैन, प्रदीपकुमार जैन रपरिया; विदिशा से पण्डित शिखरचंदजी जैन, मलूकचंदजी जैन; मेरठ से अजयजी जैन, सौरभजी जैन; सागर से सेठ गुलाबचंदजी सुभाष ट्रांसपोर्ट, सुनीलजी सर्राफ; ललितपुर से मुन्नालालजी जैन अभिलाषा, अनूपजी नजा, सुरेशजी जैन एडवोकेट इत्यादि अनेक विशेष अतिथि पधार रहे हैं।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह

रविवार, दिनांक 12 अगस्त 2018, प्रात: 8:00 बजे

अध्यक्ष	: श्री संजयजी दीवान, सूरत
ध्वजारोहणकर्त्ता	: श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन, जयपुर
प्रवचन मंडप उद्घाटनकर्त्ता	: श्री तन्मय बजाज सुपुत्र श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
मंच उद्घाटनकर्त्ता	: श्री सूरजमलजी हूमड़, रामगंजमण्डी
शिविर उद्घाटनकर्त्ता	: श्री ध्याता बजाज सुपुत्र श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
मुख्य अतिथि	: श्री महेन्द्रकुमारजी-राहुलजी गंगवाल, जयपुर
विशिष्ट अतिथि	: श्री अनिलजी सेठी, बैंगलुरु
	श्री प्रकाशजी छाबड़ा, सूरत

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् संगोष्ठी

गुरुवार, दिनांक 16 अगस्त 2018

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ (परमागम ऑनर्स) विचार गोष्ठी

शनिवार, दिनांक 18 अगस्त 2018

अ.भा. जैन युवा फैडरेशन राज. प्रांतीय अधिवेशन

रविवार, दिनांक 19 अगस्त 2018

अध्यक्ष : श्री भूपेन्द्रजी सैनी (चैयरमेन-राज.युवा बोर्ड राज्यमंत्री)

मुख्य अतिथि : श्री नरेशजी लुहाडिया, दिल्ली

विशिष्ट अतिथि : श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी, किशनगढ

दैनिक कार्यक्रम

प्रात:	5.00 से 5.30	सुप्रभात मंगलगायन
	5.30 से 6.15	प्रौढकक्षा
	6.30 से 7.00	डॉ.भारिल्लजी के प्रवचन (जिनवाणी चैनल)
	7.00 से 7.20	गुरुदेवश्री के प्रवचन (अरहंत चैनल)
	7.30 से 8.30	पूजन
	9.00 से 9.30	पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन
	9.30 से 10.30	प्रवचन : डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल
	10.45 से 11.30	विभिन्न कक्षाएं
दोपहर	2.00 से 2.30	सी.डी. प्रवचन : बाबू युगलजी
	2.30 से 3.00	छात्र प्रवचन
	3.00 से 3.45	व्याख्यानमाला
	4.00 से 5.00	विभिन्न कक्षाएं
सायं	6.30 से 7.15	कक्षा - गुणस्थान विवेचन
	7.15 से 7.45	जिनेन्द्र भक्ति
	8.00 से 8.45	प्रथम प्रवचन - आमंत्रित विद्वानों द्वारा
	8.45 से 9.45	प्रवचन - ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना

विद्वत्समागम

- डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर
- पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, जयपुर
- ब्र.सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना
- ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर
- पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली
- पण्डित शैलेषभाई, तलोद
- डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर
- डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर
- पण्डित पीयूषजी शास्त्री, जयपुर
- डॉ. प्रवीणजी शास्त्री, बांसवाड़ा
- डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई
- विदुषी स्वानुभूति जैन, मुम्बई

पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् संगोष्ठी

बुधवार, दिनांक 15 अगस्त 2018

मुख्य अतिथि : श्री अजितप्रसादजी जैन, दिल्ली

विशिष्ट अतिथि : श्री आदीशकुमारजी जैन, दिल्ली

विधान के आमंत्रणकर्त्ता

- श्री भरतभाई मेहता, सूरत
- पण्डित सिद्धार्थजी दोशी, रतलाम
- श्री शान्तिलालजी चौधरी, भीलवाड़ा
- श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन, जयपुर
- श्री वीरेशजी कासलीवाल, सूरत

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता

श्रीमान् प्रेमचंद बजाज एवं श्रीमती सुनीता बजाज, कोटा

नोट : (1) शिविर में पधारने वाले सभी शिविरार्थीयों के लिए आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था रहेगी, आपके यहाँ से कितने व कौन -कौन भाई बहिन पधार रहे हैं - इसकी सूचना अवश्य देवें ताकि समुचित व्यवस्था की जा सके। (2) रिक्शेवाले को बताने का पता : श्री टोडरमल स्मारक भवन, त्रिमूर्ति जैन मंदिर, कानोडिया कॉलेज के पीछे, ए-4, बापू नगर, गाँधीनगर रोड, जयपुर (3) कार्यक्रम स्थल एवं सम्पर्क सूत्र : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015, फोन : 2705581, 2707458 फैक्स : 2704127 (4) मुम्बई -जयपुर सुपर फास्ट, भोपाल-जोधपुर पैसेंजर, इन्दौर-जयपुर सुपरफास्ट, इन्दौर-जोधपुर इन्टरसिटी, जबलपुर अजमेर सुपरफास्ट (दयोदय) आदि ट्रेने दुर्गापुरा स्टेशन पर रुकती हैं; इनसे आने वाले यात्री यहीं उतरें एवं खजुराहो-उदयपुर एक्सप्रेस गांधीनगर स्टेशन पर रुकती है, इससे आने वाले यात्री यहीं उतरें।

कृपया आमंत्रण पत्रिका को मंदिरजी या सब देख सकें ऐसे सार्वजनिक स्थान पर अवश्य लगा देवें।

निवेदक :

सुशीलकुमार गोदिका, अध्यक्ष — डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, महामंत्री

एवं समस्त ट्रस्टीगण, पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर. 302015 (राज.)

0141-2705581, 2707458

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (18)

स्वाध्याय की विधि एवं प्रक्रिया

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

मोक्ष की अभिलाषा एक स्वत: स्फूर्त प्रक्रिया है; परन्तु मोक्ष का मार्ग पाने और उस पर आगे बढने के लिये हमें जिनवाणी और योग्य गुरुओं की शरण में जाना होगा।

जैसे कि हम पूर्व में चर्चा कर चुके हैं कि जब तक संसार में सुख की परिकल्पना कायम रहे तब तक यह जीव संसार में सुख की खोज में व्यस्त बना रहता है और उसे मोक्ष की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती है। जब यह जीव इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संसार तो एकांत दु:ख ही है तभी इसे सुखी होने के लिये मोक्ष की चाहत पैदा होती है।

संसार के भोगों में सुखबुद्धि (सुख की कल्पना) खत्म हो जाने पर भोगों की चाहत क्षीण हो जाना स्वाभाविक ही है, फलस्वरूप कषायें मंद होती हैं, आंशिक विशुद्धि उत्पन्न होती है और जिनवाणी के श्रवण, अध्ययन, मनन और चिन्तन का मार्ग प्रशस्त होता है।

मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रंथ में सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि के प्रकरण में पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं -

''कोई मंदकषायादिक का कारण पाकर ज्ञानावरणादि कर्मों का क्षयोपशम हुआ, जिससे तत्त्वविचार करने की शक्ति हुई तथा मोह मंद हुआ, जिससे तत्त्वविचार में उद्यम हुआ और बाह्य निमित्त देव-गुरु-शास्त्रादिक का हुआ उनसे सच्चे उपदेश का लाभ हुआ।''

इसप्रकार हम पाते हैं कि **मोक्ष जाने के लिये तो मोह एवं कषायों का सम्पूर्ण अभाव आवश्यक है ही; पर मोक्षमार्ग को समझने के लिये भी मोह और कषायों की मन्दता (विशुद्धि) एक पूर्वशर्त है।**

जिनवाणी के अध्ययन (स्वाध्याय) की भी एक सुनिश्चित विधि है। सर्वप्रथम तो स्वयं ही शास्त्रों का अध्ययन किया जाये अथवा अपने से विशेष ज्ञानीजनों के माध्यम से जिनवाणी का श्रवण किया जाना चाहिये। तत्पश्चात जो विषय समझ में न आये उसे अतिविनयपूर्वक उपलब्ध ज्ञानीजनों से पूछना चाहिये। ज्ञानीजनों से प्राप्त समाधान पर गंभीरतापूर्वक विचार कर, उसे युक्तिपूर्वक समझकर व तर्क की कसौटी पर कसकर प्रमाणित किया जाये। प्रमाणित होने पर उक्त तथ्यों को स्वीकार किया जाये और तब स्वयं के स्वाध्याय हेतु तथा अन्य साधर्मियों के लाभ हेतु उक्त प्राप्त, प्रमाणित तत्त्वज्ञान का उपदेश दिया जाये।

उक्त प्रक्रिया को इन पांच चरणों में परिभाषित किया जा सकता है -''**वांचना, पृच्छना (पूछना), अनुप्रेक्षा, आम्नाय और धर्मोपदेश।**''

पण्डित टोडरमलजी ने मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रंथ के सातवें अधिकार में ''सम्यकत्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि'' के प्रकरण में स्वाध्याय की उक्त संपूर्ण प्रक्रिया का अत्यन्त सटीक और तर्क-युक्तिपूर्ण वर्णन किया है।

पण्डितजी ने प्रयोजनभूत विषयों की सूची प्रदान करते हुए **मोक्षमार्ग, देव-गुरु-धर्म, जीवादि सात तत्त्व, स्वपरभेदविज्ञान तथा अपने हितकारी तथा अहितकारी भावों** की चर्चा की है।

आत्मकल्याण के लिये **उक्त विषयों का संशय-विपर्यय रहित ज्ञान अपरिहार्य है। इसके बिना आत्मकल्याण संभव ही नहीं।** यदि उक्त विषयों के सम्बन्ध में स्पष्टता है तो अन्य किसी विषय का ज्ञान हो अथवा न भी हो आत्मकल्याण रुकने वाला नहीं; पर यदि उक्त विषयों के सम्बन्ध में संशय रहित स्पष्टता न हो द्वादशांग का पाठी भी हो जाये तब भी आत्मकल्याण संभव नहीं।

हम उपरोक्त विषयों की विस्तृत व्याख्या क्रमानुसार आगे करेंगे, अभी स्वाध्याय की विधि का प्रकरण है।

जब तक प्रयोजनभूत विषयों की जानकारी और उनकी महिमा तथा उपयोगिता का ज्ञान न हो, उनकी रुचि, उन्हें जानने की जिज्ञासा, उन्हें समझने के उपक्रम का पुरुषार्थ, तन्मयता और योग्य समर्पण संभव नहीं। उक्त तत्त्वज्ञान की प्राप्ति होने पर अनुपम निधियां मिलने के समान हर्ष न हो यह संभव नहीं। इस कोटि का हर्ष ही मुमुक्षु की मोक्षमार्ग में आगे बढने की पात्रता की निशानी है।

आत्मार्थी श्रावक के तत्संबंधी मनोभावों का वर्णन पण्डित टोडरमलजी इन शब्दों में करते हैं -*''अहो! मुझे तो इन बातों की खबर ही नहीं, मैं भ्रम से भूलकर प्राप्त पर्याय में ही तन्मय हुआ; परन्तु इस पर्याय की तो थोड़े ही काल की स्थिति है तथा यहाँ मुझे सर्व निमित्त मिले हैं, इसलिये मुझे इन बातों को बराबर समझना चाहिये, क्योंकि इनमें तो मेरा ही प्रयोजन भासित होता है।''*

आखिर ऐसा क्यों न हो? भवताप से त्रस्त, निकटभव्य जीव को भवतापनाशक, आत्महितकारक, अविनश्वर शाश्वतसुख की प्राप्ति का मार्ग दिखाई दे और वह आह्लादित और प्रफुल्लित होकर उस पर दौड़ न पड़े, यह संभव ही नहीं। यदि ऐसा नहीं होता है तो समझ लेना चाहिये कि ''अभी दिल्ली दूर है''।

आखिर यह कैसे संभव है कि अनेक दिनों से भूखे, भूख से व्याकुल किसी व्यक्ति को कोई पर्याप्त मात्रा में छप्पनभोग उपलब्ध करवाये और वह उदासीन बना रहे, वह न तो प्रसन्नता और कृतज्ञता व्यक्त करे और न ही भोजन ग्रहण करे?

आत्मार्थी जीव प्रयोजनभूत तत्त्वों की जानकारी हेतु स्वयं जिनवाणी का अध्ययन करता है अथवा ज्ञानीजनों के प्रवचन सुनता है। पढे और सुने हुए विषय पर गहन चिन्तन करता है। ऐसा करने पर यदि कोई विषय समझ में न आये तो विशेष अभ्यासी ज्ञानीजनों से प्रश्न करके समाधान प्राप्त करता है। जब विषय अच्छी तरह समझ में आ जाये तो तर्क और युक्ति से प्राप्त ज्ञान की परीक्षा करता है। **परीक्षा का यह**

क्रम तब तक जारी रहता है जब तक कि निष्कर्ष जिनवाणी में उपदिष्ट निष्कर्षों से मेल न खाएं। यदि स्वयं के निष्कर्ष जिनवाणी में वर्णित वस्तुव्यवस्था से मेल न खाएं तो जिनवाणी में परिवर्तन और सुधार के प्रयास नहीं करना चाहिये, वरन यह मानना चाहिये कि हमारे चिन्तन में या विधि में ही कोई भूल है। जिनवाणी में तो विपरीतता संभव है नहीं, क्योंकि वह तो वीतरागी सर्वज्ञदेव की वाणी है। सर्वज्ञ की वाणी होने से उसमें अज्ञानजन्य भूल होना संभव नहीं है और वीतरागी होने से राग-द्वेषजन्य मलिनता होने का अवसर नहीं है।

जैसे यदि किसी बालक को गणित का कोई सवाल हल करने के लिये कहा जाये और बारंबार प्रयास करने के बावजूद भी उसका उत्तर उत्तरमाला में बतलाये गए उत्तर से न मिले तो बालक को क्या करना चाहिये? क्या उसे बाहर आकर यह घोषणा कर देना चाहिये कि 2+2=5 होते हैं 4 नहीं।

आप क्या मानते हैं? क्या उसे गणित के क्षेत्र में नयी खोज के लिये पुरस्कार मिलना चाहिये?

अरे पुरस्कार की तो बात ही क्या, वह परीक्षा में भी शून्य नंबर प्राप्त करके फेल हो जायेगा। सफल तो वह तभी होगा जब उसका निष्कर्ष उत्तरमाला में लिखे उत्तर से मेल खायेगा।

अत्यंत दुर्लभ तत्त्वज्ञान पाने के बाद भी अक्सर लोग इस मोड़ पर आकर भटक जाते हैं। जिनवाणी की अलौकिक बात उन्हें समझ में नहीं आती है और अन्वेषक बनने (कहलाने) के व्यामोह में वे इस भाषा में अपने विचारों का प्रतिपादन करने में जुट जाते हैं कि -

''जहाँ तक मैं समझता हूँ यह ऐसा होना चाहिये...वक्त के साथ धर्म भी बदलना चाहिये...आखिर हजारों वर्ष पूर्व कही गयी बातें आज के संदर्भ में कैसे प्रासंगिक हो सकती हैं...इत्यादि।''

यदि कोई मरीज डॉक्टरों के अभिप्राय से सहमत न हो और डॉक्टर द्वारा बतलाया गया उपचार करने की बजाय डॉक्टरों से ही बहस करके उन्हें स्वयं अपना ही अभिप्राय समझाने का प्रयास करे तो ऐसे मरीज का भविष्य क्या है, इस बात की कल्पना आसानी से सभी कर सकते हैं।

यदि हमें आत्मकल्याण करना है तो यह बात स्पष्टतौर पर समझ लेनी चाहिये कि वस्तुस्वरूप का निर्णय न तो विशाल बहुमत से हो सकता है और न ही असीम बाहुबल और शक्ति से, यह आशा, आकांक्षा, भय या लोभ के प्रभाव में करने योग्य कार्य नहीं है। बहुमत तो जगत में अज्ञानियों का ही है और सदा उनका ही प्रचंड बहुमत रहेगा; क्योंकि ज्ञानी तो जगत में टिकते ही कहाँ हैं, वे तो मोक्ष चले जाते हैं।

प्रसंगवश एक बात और कह देना चाहता हूँ; यद्यपि आज भी हमें वीतरागी-सर्वज्ञदेव द्वारा प्रतिपादित, आत्मकल्याणकारी तत्त्वज्ञान सहज सुलभ है, तथापि इसकी रुचि, इसके प्रति समर्पण और अंतत: (बिना मीनमेख के) इसकी स्वीकृति दुर्लभ ही है; क्योंकि **हमारे अटकने या भटकने के अवसर अनेक हैं।** यही कारण है कि तत्त्वज्ञान सुलभ होने के बावजूद सम्पूर्ण तीन लोक में से छह महीने और आठ समय में मात्र 608 जीव ही इस मार्ग पर लग पाते हैं, अपना कल्याण कर पाते हैं। यह औसत तो तब है जबकि महाविदेह में 20 तीर्थंकर सदा ही विद्यमान रहकर दिव्यध्वनि द्वारा तत्त्वोपदेश देते रहते हैं।

यदि हम सचमुच आत्मार्थी हैं और त्वरित ही आत्मकल्याण करना चाहते हैं तो हमें सावधान रहना होगा कि **हम अटक न जाएं, हम भटक न जाएं।** **(क्रमशः)**

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की -

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों की वाग्पटुता हेतु साप्ताहिक गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में इस सत्र की प्रथम गोष्ठी रविवार, दिनांक 8 जुलाई को '**देव-शास्त्र-गुरु**' विषय पर आयोजित हुई।

इस अवसर पर सत्र के प्रारम्भ में गोष्ठी की उद्घाटन सभा हुई, जिसमें पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित संजीवजी खड़ैरी, श्री अनेकान्तजी भारिल्ल, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्रीमती कमला भारिल्ल आदि महानुभाव उपस्थित थे।

गोष्ठी के अध्यक्ष के रूप में श्रीमती कमला भारिल्ल एवं निर्णायक के रूप में पण्डित संजीवजी शास्त्री, खड़ैरी उपस्थित थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अनिमेष भारिल्ल, राघौगढ (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं सहज जैन, पिड़ावा (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण संदेश जैन, दिल्ली (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन पीयूष जैन, टडा व सपन जैन, सागर ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

28 व 29 जुलाई	दिल्ली (शाह ऑडिटोरियम)	वीरशासन जयंती
12 से 21 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
6 से 13 सितम्बर	अध्यात्म स्टडी सर्किल मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
14 से 25 सित.	बेलगांव (कर्ना.)	दशलक्षण महापर्व
5 से 12 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
16 से 21 अक्टू.	पोन्नूर	तमिलानाडु तीर्थयात्रा

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें- वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

ब्र. यशपालजी जैन का सम्मान

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 12 जुलाई को दिगम्बर जैन समाज, बापूनगर संभाग के पदाधिकारियों द्वारा ब्र.यशपालजी जैन का वरिष्ठ नागरिक होने एवं तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में उनकी सेवाओं को स्मरण करते हुए तिलक, माल्यार्पण एवं शॉल ओढाकर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में महासभा के अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, महामंत्री श्री राजेन्द्रकुमारजी, मंत्री श्री सुरेन्द्रजी पाटनी, श्री राजेशजी बड़जात्या व अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे। विद्वत्गणों में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं महाविद्यालय के समस्त छात्रगण उपस्थित थे। – जिनकुमार शास्त्री

दशलक्षण पर्व हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई-मेल द्वारा भेजें। यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र डाक, एस.एम.एस./वॉट्सएप द्वारा भेजे जा रहे हैं; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से समय पर न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें।

– महामंत्री

स्वीकृति भेजने का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.)** 302015 **फोन नं.**-0141-2705581, 2707458, **मो.** 9785643202 **(पीयूष जैन) E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

दशलक्षण महापर्व हेतु सूचना

- दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें। संपर्क सूत्र – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.)** 302015 **फोन नं.**- 0141-2705581, 2707458, **E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

सोश्यल मीडिया द्वारा तत्त्वप्रचार

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी आप हमारे facebook पेज pandit todarmal smarak trust के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.facebook.com/ptst.jaipur

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी एवं सत्साहित्य का ऑनलाईन ऑर्डर देने हेतु visit करें –
www.ptst.in

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों को आप USTREAM के माध्यम से लाईव देख सकते हैं।
www.ustream.tv/channel/ptst

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों का लाभ आप हमारे YouTube चैनल PTST के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.youtube.com/user/todarmalsmaraktrust

जैनधर्म को प्रारम्भ से सीखने अथवा और भी विविध विषयों को डॉ. संजीवकुमार गोधा द्वारा YouTube पर सुनने के लिये निम्न लिंक का प्रयोग करें –
www.youtube.com/c/drsanjeevgodha

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com